

जलवायु परिवर्तन का असर- उत्तराखण्ड में समय से पहले खलिते लगे फूल, रंग और गंध में भी अंतर

चर्चा में क्यों?

हाल ही में भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं कृषेत्रीय प्रभारी डॉ. एस.के. सहि ने बताया कि उत्तराखण्ड में जलवायु परिवर्तन के कारण न सिर्फ फूल निर्धारित समय से पहले खलिते लगे हैं, बल्कि उनके रंगों में भी बदलाव देखने को मलल रहा है।

प्रमुख बढल

- भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण के वैज्ञानिकों के अनुसार पूरी दुनलल में साढे 4 लाख ऐसी वनस्पतललल पाई जाती हैं, जलनलमें फूल खलिते हैं। इनमें से 40,000 प्रजातललल की वनस्पतललल भारत में पाई जाती हैं। 20 हज़ार प्रजातललल ऐसी हैं, जलनलमें तय समय पर फूल खलिते हैं। नश्चलतल तापमान और वातावरण में ही फूलों के खलिते की प्रक्रललल शुरु होती है।
- कुछ फूल ऐसे हैं, जो ऋतुओं के आने का संकेत देते हैं, लेकनल अब जलवायु परिवर्तन से फूलों के खलिते के समय में भी बदलाव देखने को मलल रहा है।
- डॉ. एस.के. सहि के मुताबकल राज्य के उच्च हलमलली कृषेत्रों में पाया जाने वाला राज्य पुष्प ब्रह्म कमल भी अब निर्धारित समय से पहले खलिते लगा है। वहीँ फूलों की घाटी में भी समय से पहले फूल खलिते की बातें सामने आ रही हैं।
- जलवायु परिवर्तन और तापमान में बढोतरी से अब फूलों के रंगों में भी बदलाव देखने को मलल रहा है। अमेरकलन साइंस जर्नल करेंट बायोलॉजी में प्रकाशलतल एक लेख के मुताबकल, फूलों के पलगलमेंट में भी रासायनकल बदलाव देखने को मलल रहा है। पलगलमेंट ही पराबैंगनी करलणों को अवशोषलतल करता है। पराबैंगनी करलणों का सबसे अधकल असर उच्च हलमलली कृषेत्रों के फूलों पर देखने को मलल रहा है।
- शोध में यह बात भी सामने आई कल अत्यधकल कार्बन उत्सर्जन से ओज़ोन परत के कृषरण और अधकल अल्ट्रावायलेट करलणों के धरती पर आने से फूलों के परागकणों पर भी असर पढा है। यह भी फूलों के खलिते के समय और रंगों में बदलाव का एक कारण रहा है।